खेती री बातां

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष–15 अंक–1 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 जनवरी 2012 वार्षिक शुल्क –12 रूपये

कृषि विभाग की तीन वर्ष की महत्वपूर्ण उपलब्धियां

1. राजस्थान किसान आयोग का गठन – राज्य सरकार ने राजस्थान किसान आयोग का गठन कर आयोग के अध्यक्ष पद पर माननीय श्री नारायण सिंह का मनोनयन किया है तथा निदेशक कृषि को आयोग का सदस्य सचिव नियुक्त किया है। आयोग राज्य में किसानों की दशा, किसानों पर कर्जा, ऋण व्यवस्था, उपज का मूल्य, मण्डी व्यवस्था, कृषि उत्पाद निर्यात, कृषि आधारित उद्योग, कृषि मजदूर आदि विषयों पर सरकार के समक्ष सिफारिशें प्रस्तुत करेगा।

2. दलहन उत्पादन में राज्य को प्रथम पुरस्कार – भारत सरकार द्वारा वर्ष 2010–11 में दलहनी फसलों के अधिकतम उत्पादन के लिये राजस्थान राज्य को प्रथम पुरस्कार के रूप में 1.00 करोड़ रूपये नकद राशि से पुरस्कृत किया गया।

3. प्रगतिशील कृषकों को पुरस्कार का अभिनव कार्य – देश में राजस्थान प्रगतिशील कृषकों को पुरस्कृत करने वाला प्रथम राज्य है। वर्ष 2009–10 में 474 प्रगतिशील कृषकों एवं लगातार दूसरे वर्ष 2010–11 में 496 प्रगतिशील कृषकों को पुरस्कृत किया गया।

4. अकाल पीड़ित किसानों को सहायता – वर्ष 2009–10 में सम्पूर्ण राज्य में गम्भीर अकाल पड़ा, जिससे कृषकों की फसलों पर विपरीत प्रभाव पड़ा एवं किसानों को व्यापक आर्थिक नुकसान हुआ। कृषि आदान अनुदान के तहत प्रथम बार वृहद स्तर पर रू. 798 करोड़ का वितरण किसानों में किया गया।

5. कृषि बीमा योजना गत तीन वर्षों में राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना अन्तर्गत खरीफ 2008 से रबी 2009–10 तक 1773.70 करोड़ रूपये का मुआवजा 28.60 लाख कृषकों को दिया गया एवं मौसम आधारित फसल बीमा योजना अन्तर्गत खरीफ 2008 से रबी 2010–11 तक 426.06 करोड़ का मुआवजा राज्य के 24.52 लाख कृषकों को दिया गया।

6. कृषि नीति – राज्य सरकार द्वारा राज्य कृषि नीति का प्रारूप तैयार कर लिया गया है। इस कृषि नीति के लागू किये जाने से कृषि उत्पादन में वृद्धि के साथ–साथ कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

7. जिलेवार कृषि योजना – राज्य के सभी 33 जिलों की जिला कृषि योजना तैयार की गई है। इन 33 जिलों की योजनाओं को सम्मिलित करते हुए राज्य की कृषि योजना तैयार की गई है। इस योजना से राज्य की क्षेत्र विशेष की आवश्यकता के अनुसार कृषि विकास के कार्यक्रम राज्य में सम्पादित किये जा सकेंगे।

8. खरीफ व रबी पूर्व विशेष अभियान – विभाग की नवीनतम तकनीकी गतिविधियों एवं योजनाओं का ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार–प्रसार किये जाने के उद्देश्य से खरीफ एवं रबी पूर्व प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर शिविर आयोजित किये जाते हैं। इन अभियानों में तीन वर्षों में 46 लाख से अधिक कृषकों की सहभागिता रही। इन अभियानों का मुख्य ध्येय किसानों की आय में वृद्धि के प्रभावी प्रयास और फसल की गुणवत्ता एवं उत्पादकता में वृद्धि के साथ–साथ कृषि एवं सम्बंध विभागों से कृषकों को देय सुविधाओं व अनुदानों का ज्यादा से ज्यादा लाभ दिलाना है।

9. मृदा स्वास्थ्य कार्यक्रम – राज्य की सभी पंचायत समितियों के भूमि उर्वरा शक्ति का सर्वेक्षण कार्य कर 38051 ग्रामों का उर्वरता स्तर डाटा विभागीय वैब–साईट पर अपलोड कर दिया गया है। विभागीय 33 मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं द्वारा वर्ष 2009–10 में 2.85 लाख एवं वर्ष 2010–11 में 2.84 लाख मृदा स्वास्थ्य कार्डों का वितरण किया गया। इसके अतिरिक्त मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता प्रबन्ध परियोजना के अन्तर्गत 12 भ्रमणशील मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं द्वारा वर्ष 2010–11 में 28143 एवं वर्ष 2011–12 में माह अक्टूबर 2011 तक 2.00 लाख मृदा स्वास्थ्य कार्डों का कृषकों को वितरण किया गया।

10. जल का कुशलतम उपयोग –

- राज्य में उपलब्ध जल के समुचित उपयोग हेतु किसानों को उन्नत सिंचाई तकनीकी का ज्ञान उपलब्ध कराकर वर्ष 2009–10 से अक्टूबर 2011 तक 21379 कि.मी. सिंचाई पाईपलाइन पर रूपये 38.11 करोड़ का अनुदान वितरित किया जा चुका है।
- डिग्गी कम स्पिकलरः वर्ष 2009–10 से अक्टूबर 2011 तक 7852 डिग्गियों का निमार्ण कर रूपये 147 करोड़ का अनुदान कृषकों को वितरित किया जा चुका है।
- फार्म–पौण्डः वर्ष 2009–10 से अक्टूबर 2011 तक 6028 फार्म–पौण्ड का निमार्ण कर 20.04 करोड़ रू. का अनुदान कृषकों को वितरित किया जा चुका है।
- जलहौज–वर्ष 2009–10 से माह अक्टूबर 2011 तक 2353 जल हौज का निर्माण कर रूपये 10.34 करोड़ का अनुदान वितरित किया जा चुका है।

11. बीज वितरण एवं बीज प्रतिस्थापन दर – खरीफ 2009 में 5.17 लाख क्वि. एवं रबी 2009–10 में 9.67 लाख क्वि. प्रमाणित/उन्नत बीज का वितरण हुआ। वर्ष 2010–11 में कुल 16.13 लाख क्वि. उन्नत/प्रमाणित बीज का वितरण राज्य में हुआ। खरीफ 2011 में 6.07 लाख क्वि. बीज का वितरण किया गया है। रबी 2011–12 में कुल 13.00 लाख क्वि. बीज वितरण का कार्यक्रम प्रस्तावित किया गया है।

12. उर्वरकों का कुशल प्रबंधन – बुवाई के समय पर्याप्त मात्रा में उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए वर्ष 2010–11 में 3.20 लाख टन डी.ए.पी. का अग्रिम भण्डारण किया गया जिसके फलस्वरूप बुआई के समय डी.ए.पी. की कमी महसूस नहीं की गई। दिसम्बर 2008 से 31 अक्टूबर 2011 तक 68.96 लाख मै. टन उर्वरक कृषकों में वितरित किया गया।

बीज उत्पादन बढ़ाने में योगदान करें

जयपुर, 25 नवम्बर। कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क ने पंत कृषि भवन में राजस्थान राज्य बीज निगम की ओर से आयोजित नवनियुक्त संयंत्र प्रबन्धक व बीज अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर कहा है कि वे कृषि योजनाओं के कृषकों तक पहुंचाने में योगदान करने के साथ गुणवत्तायुक्त बीज सुलभ कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। उन्होंने कहा कि बीज उत्पादन से लेकर कृषकों के खेत तक समय पर बीज पहुंचाने में बीज अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बीज उत्पादन बढ़ाने पर जोर देते हुए श्री बुरड़क ने कहा कि बीज निगम बीज उत्पादन को प्रतिवर्ष बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है। समारोह में उपस्थित अन्य अधिकारियों ने भी अपने विचाार प्रस्तुत किए।

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

bl vad esa——

www.krishi.rajasthan.gov.in

- इस माह के कृषि कार्य
- चतुर फुलवा

.. पृष्ठ 2

- ऑवले के संरक्षित उत्पाद.....
- शीत लहर एवं पाले से फसल.....
- गोभी वर्गीय सब्जियों.....

. पृष्ठ 3

- सरसों में मोयला प्रबन्धन.....
- फसलों में जस्ते की कमीं.....
- चनें के फली छेदक कीट.....
- जौं में मोल्या रोग..... पृष्ठ 4

दूरभाष – 5116240, 2227365/211

इस माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

• गेहूँ व जौ में रोली का प्रकोप दिखाई देने पर 25 किलो गंधक के चूर्ण का भुरकाव प्रति हैक्टर की दर से करें अथवा कैराथियॉन एक ग्राम दवा प्रति लीटर पानी अथवा मैन्कोजेब 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें।

• गेहूँ की फसल में नत्रजन की शेष आधी मात्रा दो बार में पहली व दूसरी सिंचाई के साथ देवें। खेत की मिट्टी परीक्षण के उपरान्त सिफारिश के अनुसार नत्रजन की मात्रा खड़ी फसल में देनी चाहिए।

• सरसों की फसल को पाले से बचाने एवं दानों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए आधा ग्राम थायोयूरिया प्रति लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के 40–45 दिन की अवस्था पर (फूल आने से पूर्व) एवं 50–60 दिन की अवस्था पर (फली भराव) दो छिड़काव करें।

• सरसों की फसल में झुलसा, तुलासिता व सफेद रोली रोग के लक्षण दिखाई देते ही मैन्कोजेब अथवा रिडोमिल एम.जेड. का 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी

• अमरूद व अनार में मिली बग टहनियों व पंखुडियों में चिपक कर रस चूसती हैं। इसके नियंत्रण हेतु डायमिथोएट 30 ई.सी. या फेनाथियॉन 50 ई.सी. 1 मिली लीटर दवा का प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।

• आम में मॉलफोरमेशन की रोकथाम

के लिए प्लेनोफिक्स 1 मिली लीटर या बॉविस्टिन 1 ग्राम या डाइजिनॉन 1 मिली लीटर दवा प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।

• आम, अमरूद व अंगूर में एन्थ्रेक्नोज रोग के कारण पत्तियों पर हरे काले रंग के फफोलेनुमा धब्बे दिखाई देते हैं। इसके नियंत्रण के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड दवा 3 ग्राम या मेन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

सब्जियॉ

• मिर्च में पर्णकुंचन या माथा बंधना रोग एक विषाणुजनित रोग है इसके नियंत्रण हेतु पौधशाला में 40 मेश जाली का प्रयोग करें। पौधरोपण के 10–12 दिन बाद मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. दवा का छिड़काव करें तथा 15 दिन बाद छिड़काव पुनः दोहराएं। फूल आते समय इस दवा के स्थान पर मैलाथियॉन 50 ई.सी. दवा एक मिली लीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।

• कुष्माण्ड कुल की ग्रीष्मकालीन सब्जियों जैसे तुरई, खीरा, कद्दू, करेला, टिण्डा, ककड़ी, तरबूज की बुवाई हेतु खेत की जुताई कर खेत तैयार कर लेवें।

पुष्पोत्पादन

• गैंदा (हजारा) की ग्रीष्म ऋतु की फसल हेतु तैयार पौध की रोपाई करें। कतारों एवं पौधों के बीच 30–30 से.मी. की दूरी रखें।

• रजनीगंधा के बल्बों के रोपण हेतु क्यारियों में 45 सें.मी. गहरी खुदाई करके 15 दिनों के लिए छोड़ दें।

• कलमों द्वारा गुलाब की पौध तैयार करें।

औषधीय फसलें

• ईसबगोल की फसल में पत्ती धब्बा या अंगमारी रोग तथा तुलासिता का प्रकोप होने पर मैन्कोजेब या रिडोमिल एम.जेड. का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

मसाले

• धनिये में तना पिटक रोग, जिसके कारण पौधे की पत्तियों व तनों पर फफोले बनते हैं के नियंत्रण के लिए बेलेटिन 1 ग्राम या सिस्थेन 0.4 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

• जीरे की फसल में माहू कीट और झुलसा रोग के जैविक नियंत्रण हेतु गोमूत्र 10 प्रतिशत+लहसुन अर्क 2 प्रतिशत + निम्बोली अर्क 2.5 प्रतिशत का मिश्रित छिड़काव दो बार करें।

• लहसुन में तुलासिता से प्रभावित पौधों की पत्तियों पर सफेद फफूंद लग जाती है। जबकि अंगमारी रोग में सफेद धब्बे पड़ जाते हैं। ये धब्बे बाद में बीच से बैंगनी रंग के हो जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए फसल पर जाइनेब या मैन्कोजेब 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।

पशुपालन व दुग्ध उत्पादन

• पशुओं को खुरपका एवं मुंहपका रोग के बचाव हेतु टीकाकरण करवायें।

• पशुओं को ठंड से बचायें। उन्हें टाट/बोरे से ढकें। पशुशाला में जलती आग न छोड़ें।

आँवले के संरक्षित उत्पाद बनायें मुनाफा कमाएं

आँवले की फसल अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह से मार्च माह तक उपलब्ध रहती है। पूरे वर्ष के उपयोग हेतु आँवले के विभिन्न संरक्षित उत्पाद् तैयार किये जा सकते हैं।

शुष्क आँवला – आँवले को उबालकर, फांकों को गुठली से अलग कर लें तथा फांको में 2 ग्राम प्रति किलो की दर से पोटेशियम मेटा–बाई–सल्फाइट अच्छी तरह से मिलाकर फांको को धूप में सुखा लें। इस प्रकार सूखे आँवलों का रंग काला नहीं पड़ेगा। आवश्यकतानुसार सूखे आँवले की फांको को पीसकर आँवला पाउडर बनाया जा सकता है।

आँवला जैम – आँवला के पल्प को स्टील या एल्यूमीनियम के भगोने में लेकर आग पर रखकर किसी चमचे से हिलाते हुए उबालें, जिससे पल्प भगोने के पैंदे में न लग जाये। पल्प की मात्रा के बराबर की चीनी धीरे–धीरे उबलते पल्प में डालते जायें तथा चमचे से हिलाते जायें जब तक पल्प चीनी के साथ उबलकर हलुवे की तरह गाढ़ा न हो जाये । गर्म–गर्म जैम को चौड़े मुंह के कॉच के जार में भरकर ठंडा होने दें व बाद में ढक्कन लगाकर प्रयोग हेतु संरक्षित कर लें। एक किलो पल्प हेतु लगभग एक किलो चीनी का प्रयोग किया जाता है।

आँवला स्क्वैश – इसके लिए दो किलो चीनी को 1.5 लीटर पानी के साथ गर्म करके घोल लें तथा गर्म करते समय उसमें 10 ग्राम साइट्रिक एसिड डाल दें। घोल को ठंडा करके कपड़े से छान लें तथा इस घोल में महीन छलनी से छना हुआ आँवले का 200 ग्राम पल्प तथा 2 ग्राम पोटेशियम मेटा–बाई–सल्फाइट मिलाकर ढक्कनदार स्क्वैश की बोतल में भरकर प्रयोग हेतु रख लें। एक भाग स्क्वैश में तीन भाग ठंडा पानी मिलाकर प्रयोग करें।

आँवला मुरब्बा – बड़े आकार के पूर्ण विकसित आँवले लेकर, उनको अच्छी तरह से धोकर दो दिन के लिए स्टील या एल्यूमीनियम के भगोने या प्लास्टिक के टब में पानी में रखें, जिससे आँवले कुछ मुलायम हो जायें, इसके बाद आँवलों को किसी स्टेनलेस स्टील के फोर्क या कांटों वाली चम्मच से अच्छी तरह गुठली की गहराई तक गोद लें। गोदे हुये आँवलों को

उबलते पानी में 10–15 मिनट तक इतना उबालें कि आँवले मुलायम हो जायें पर फांके अलग न हो।

1 किलो आँवले हेतु लगभग 1.5 किलो चीनी की आवश्यकता होती है। इसे उबले हुए आंवलों पर चीनी की तह बनने में प्रयोग करें। इसके लिए भगोने में चीनी की पतली तह बनाकर उस पर आँवले रखें। इन आँवलों के ऊपर फिर पानी की तह लगायें, चीनी की अन्तिम तह को भी पानी से ढक दें। भगोना ढक कर आँवलों को 24 घंटो के लिये ऐसे ही छोड़ दें। फिर आँवलों को भगोने से निकाल कर बिना घुली चीनी को गर्म करके आँवलों से निकले पानी में घोल लें तथा शेष बची चीनी का 1/3 भाग इसी घोल में मिलाकर गर्म करें। इस घोल में अब आँवलों को डालकर लगभग 5 मिनट तक उबालें तथा आँवलों को 24 घंटे के लिए ढककर ऐसे ही छोड़ दें। दूसरे दिन यही प्रक्रिया शेष बची चीनी की आधी मात्रा डालकर अपनायें। तीसरे दिन शेष चीनी के साथ प्रति किलो आँवले के लिये 5 ग्राम साइट्रिक अम्ल डालकर यही प्रक्रिया अपनायें तथा आँवलों को अच्छी तरह चीनी के घोल में हिलाकर, घोल को दो उंगलियों के बीच खींचने पर यदि तीन तार की चाशनी आती है, तो मुरब्बे को तैयार समझें तथा उपयोग हेतु संरक्षित करें।

आँवले का आचार –

आँवले का आचार बनाने हेतु पूर्ण विकसित आँवलों को अच्छी तरह धोकर प्रेशर कुकर में दो सिटी लगाकर इतना उबाले कि उबालने पर आँवले की फॉकों को गुठली से आसानी से अलग किया जा सके। प्राप्त आँवले की फाकों को कपड़े पर फैलाकर 3–4 घन्टे धूप में रखें। फिर फॉको मे प्रति किलो के हिसाब से 100

शेष पृष्ठ 4 पर.....

शीत लहर एवं पाले से फसल की सुरक्षा

शीत लहर एवं पाले से सर्दी के मौसम में सभी फसलों को थोड़ा या ज्यादा नुकसान होता है। पाले के प्रभाव से पौधों की पत्तियॉ एवं फूल झुलसे हुए दिखाई देते हैं एवं झड़ जाते हैं। यहां तक कि अध–पके फल सिकुड़ जाते हैं। फलियों एवं बालियों में दाने नहीं बनते हैं व बन रहे दाने सिकुड़ जाते हैं।

शीत लहर एवं पाले से फसल की सुरक्षा के उपाय

1. जिस रात पाला पड़ने की सम्भावना हो उस रात 12 से 2 बजे के आस–पास खेत की उत्तरी–पश्चिमी दिशा से आने वाली ठण्डी हवा की दिशा में खेतों के किनारे पर बोई हुई फसल के आस–पास, मेड़ों पर, रात्रि में कूड़ा कचरा या अन्य व्यर्थ घास फूस जलाकर धुआं करना चाहिये, ताकि खेत में धुआं हो जाये एवं वातावरण में गर्मी आ जाये।

2. पौधशालाओं के पौधों एवं सीमित क्षेत्र वाले उद्यानों/नकदी सब्जी वाली फसलों में भूमि के ताप को कम न होने देने के लिये फसलों को टाट, पोलीथिन अथवा भूसे से ढक देवें। वायुरोधी टाटियां हवा आने वाली दिशा की तरफ यानि उत्तर–पश्चिम की तरफ बांधे।

3. जब पाला पड़ने की सम्भावना हो तब खेत में सिंचाई करनी चाहिये। नमीयुक्त जमीन में काफी देरी तक गर्मी रहती है तथा भूमि का तापक्रम एकदम कम नहीं होता है। वैज्ञानिकों के अनुसार सर्दी में फसल में सिंचाई करने से 0.5 डिग्री से 2 डिग्री सेल्शियस तक तापमान बढ़ जाता है।

4. जिन दिनों पाला पड़ने की सम्भावना हो उन दिनों फसलों पर गन्धक के तेजाब के 0.1 प्रतिशत घोल (1 मिली.लीटर तेजाब एक लीटर पानी में) का छिड़काव करना

चाहिये। इस हेतु एक लीटर गन्धक के तेजाब को 1000 लीटर पानी में घोलकर एक हैक्टर क्षेत्र में स्प्रेयर से छिड़काव करें। ध्यान रखें कि पौधों पर घोल की फुहार अच्छी तरह लगे। गन्धक के तेजाब के छिड़काव को 15–15 दिन के अन्तर से दोहराते रहें।

5. दीर्घकालीन उपाय के रूप में फसलों को बचाने के लिये खेत की उत्तरी–पश्चिमी मेड़ों पर तथा बीच–बीच में उचित स्थानों पर वायु अवरोधक पेड़ जैसे शहतूत, शीशम, बबूल, खेजड़ी, अरडू एवं जामुन आदि लगा दिये जायें तो पाले और ठण्डी हवा के झोंकों से फसल का बचाव हो सकता है।

गोभी वर्गीय सब्जियों को कीटों से बचाएं

गोभी वर्गीय सब्जियों में कीट–व्याधियों का आक्रमण होने की वजह से उपज में काफी गिरावट हो जाती है। फसल की सफलता पौध संरक्षण उपायों पर काफी निर्भर करती है। कृषकों को रोग के फलने के विभिन्न कारकों व उनके प्रबंधन के विधियों की जानकारी प्राप्त कर समय रहते उपयुक्त नियंत्रण विधि अपनानी चाहिए।

प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधनः–

• पत्ती भक्षक कीट

इसमें आरा मक्खी, फली बीटल, पत्ती भक्षक लटें, हीरक तितली एवं गोभी की तितली मुख्य हैं। इन कीटों की सुण्डियॉ पत्तियों को खाकर नुकसान पहुॅचाती हैं। हीरक तितली की सुण्डी शीर्ष पत्तियों को खाकर नुकसान पहुॅचाती है। छोटे फूलों को भी यह नुकसान पहुंचाती है। नियंत्रण हेतु फूल बनने से पूर्व मैलाथियॉन 5 प्रतिशत अथवा कार्बोरिल 5 प्रतिशत के 20 किलो चूर्ण का प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव करना चाहिए। फूल बनने के बाद एक मिलीलीटर मैलाथियान का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें 15 दिन के बाद दोहरावें।

• डाइमंड बैक मौथ

बी.टी.के.(बेसिलस थूरींजेंसीस कस्टकी) 500 ग्राम प्रति हेक्टर के दो छिड़काव। प्रथम छिड़काव रोपण के 25 दिन बाद एवं दूसरा इसके 10 दिन बाद करें। अंतिम छिड़काव

शेष पृष्ठ 4 पर.....

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां "

घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि निदेशालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। अपना स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14

आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषित–

प्रेषक–
उप निदेशक कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

सरसों में मोयला प्रबन्धन

सरसों में माहू (चेंपा) या मोयला कीट सरसों फसल को काफी नुकसान पहुंचाता है।

हानि के लक्षण

प्रौढ़ व शिशु दोनों पौधों के विभिन्न भागों जैसे पुष्पक्रम, पत्ती, तना, टहनी व फलियों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं। ये कीट पहले फसल की वानस्पतिक कलिका पर दिखाई देते हैं व धीरे–धीरे पूरे पौधे को ढक लेते हैं। उग्र प्रकोप की दशा में पौधा बौना रह जाता है, सूख जाता है व फलियां नहीं बनती हैं।

मोयला की रोकथाम

मोयला की रोकथाम हेतु मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत या कार्बेरिल 5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टर भुरकें। पानी की सुविधा वाले स्थानों में थायोमिथोक्जाम 25 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 100 ग्राम या मैलाथियॉन 50 ई.सी. सवा लीटर या डायमिथोएट 30 ई.सी. 875 मिलीलीटर या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. या कार्बेरिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण ढाई किलो प्रति हैक्टर की दर से 400–500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। छिड़काव हमेशा सायंकाल करना चाहिये। यदि फसल में मित्रकीट शत्रु जैसे लेडी बर्ड बीटिल (काक्सीनेला स्पीसीज), सिरफिड (सिरफिड स्पीसीज), परजीवी पर्याप्त मात्रा में हो तो छिड़काव नहीं करना चाहिये।

जौ में मोल्या रोग

यह एक सूत्रकृमि जनित रोग है। रोगग्रस्त पौधे छोटे रहकर पीले पड़ जाते हैं और जड़ों में गाठें बन जाती हैं। रोग की रोकथाम हेतु जौ की मोल्या रोग रोधी किस्में आर.डी. 2035 या आर.डी. 2052 या आर.डी. 2503 काम में लेवें। फसल चक्र में चना, सरसों, प्याज, सूरजमुखी, मैथी, आलु या गाजर आदि बोयें। रोकथाम हेतु मई–जून की कड़ी गर्मी में एक पखवाड़े के अन्तर से खेतों की दो बार गहरी जुताई करें।

जिन खेतों में रोग का अधिक प्रकोप हो वहॉ खेत की बुवाई से पहले 30 किलो कार्बोफ्यूरॉन दवा यदि बुवाई से पहले नहीं दी गई है तो शीर्ष जड़ जमने के समय पहली सिंचाई के साथ भूमि में दिया जाना उपयुक्त पाया गया है।

घातक है फसलों में जस्ते की कमी

जस्ता एक सूक्ष्म पोषक तत्व है जो पौधों की जटिल प्रकियाओं एवम् नाइट्रोजन व फास्फोरस तत्वों के उपयोग में सहायक होता है। सघन खेती वाले सिंचित क्षेत्रों में इस तत्व की कमी देखी जा रही है। जिंक की कमी से उपज में भारी कमी होती है। तत्व की कमी के लक्षण ऊपर से तीसरी पत्ती पर पीली या सफेद धारियों के रूप में उभरते हैं।

मिट्टी की जांच करायें। जस्ते की कमी वाले क्षेत्रों में बुवाई से पूर्व प्रति हैक्टर 25 किग्रा जिंक सल्फेट या 10 किग्रा चिलेटिड जिंक ऊर कर देवें। खड़ी फसल में 5 ग्राम जिंक सल्फेट व 20 ग्राम यूरिया प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

चने के फली छेदक कीट से बचाव

जनवरी–फरवरी में चने में फलियां आने का समय होता है। साथ ही अनुकूल मौसम होने के कारण फली छेदक कीट का प्रकोप भी तेजी से बढ़ता है। यदि चने के खेत में इस कीट के 2–3 अंडे प्रति पौधा या एक लार्वा प्रति दस पौधे से अधिक हों तो इसका नियंत्रण शुरु कर देना चाहिए। इसके लिये कुछ बातों का ध्यान रखना जरुरी है–

- प्रति हैक्टर फसल में 5 फैरोमोन ट्रेप लगायें। इससे फली छेदक कीट के नर मौथ (तितलियाँ) आकर्षित होकर थैली में इकट्ठे हो जाते हैं। इन्हें नष्ट कर दें।
- सांयकाल से 2 घण्टे तक खेत के किनारे प्रकाशपाश द्वारा प्रौढ़ कीटों को आकर्षित कर नष्ट करें ।
- अजाडिरेक्टिन (1500 पी.पी.एम.) दवा 3 मिलीलीटर/लीटर पानी की दर से 15 दिन के अन्तराल पर दो छिड़काव सुबह या सांयकाल करें।
- जैव आधारित कीटनाशी इमामैक्टिन बेन्जोएट 5 एस.जी. 0.5 ग्राम/ लीटर या स्पाइनोसिड 2 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें।

✳ जैविक नियन्त्रण उपाय के लिये एक हैक्टर फसल में एक किलो बी. टी. अथवा एन.पी.वी. की 250 एल.ई. मात्रा का छिड़काव करें।

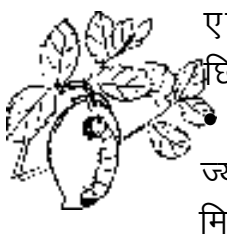

जब प्रकोप ज्यादा होने लगे तो मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत या मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण का 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव करें। पानी की सुविधा हो तो एक हैक्टर में मोनोक्रोटोफॉस 36 डब्ल्यू. एस. सी. एक लीटर को 700 से 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें अथवा ऐसीफट 75 एस.पी. 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। यह उपाय फूल आते समय व फली बनते समय करने पर इस कीट से बचाव हो जाता है।

पृष्ठ 3 का शेष..... गोभी वर्गीय.....

फसल काटने के 4 सप्ताह पूर्व करें अथवा स्पाइनोसेड 25 एस सी 15 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टर की दर से 3 बार छिड़काव करें या प्रोफेन्फोस 40 ई सी 1000–1500 मिली लीटर प्रति हेक्टर या बुलडाक 0.25 एस सी 760–1000 मिली लीटर दवा 400–500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव करें।

तम्बाकू की सुण्डी

इस कीट की सुण्डी पत्तियों को खाकर उनमें गोल छेद बना देती है। यह गोभी के फूल को भी अंदर की ओर खाकर नुकसान पहुॅचाती है। नियंत्रण हेतु मैलाथियान 2 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव 10–15 दिन के अन्तर पर करना चाहिए।

परख

दिसम्बर, 2011 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उत्तर भेजने वाले कृषकों में से दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1. **श्री नारायण जणवा**
   पुत्र श्री काशीराम जी
   ग्रा0 करजू
   वाया– बड़ी सादड़ी
   जिला – प्रतापगढ़
2. **श्री कालाराम**
   पुत्र श्री वजाजी सोलंकी
   ग्रा0 पो0– सिन्धासवा हरनियान
   वाया– गुढ़ामालानी
   जिला– बाड़मेर–344031

(विजेताओं को पुरस्कार स्वरुप कृषि साहित्य डाक द्वारा भेजा जा रहा है।)

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 फसलों को पाले से बचाने के लिए कौनसे अम्ल का छिड़काव करना चाहिए।

प्र.2 लहसुन की फसल में अंगमारी रोग के नियंत्रण का उपाय बताए।

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के जवाब इस पते पर उपनिदेशक कृषि (सूचना), कमरा नम्बर 118, पंत कृषि भवन, जयपुर 302005

पृष्ठ 3 का शेष.....**ऑवले**.....

ग्राम हल्दी अच्छी तरह मिलाकर 1 दिन धूप में रखें। दूसरे दिन प्रति किलो ऑवले के वजन के हिसाब से इसमें 20 ग्राम गरम मसाला, 10 ग्राम लाल मिर्च व 1 ग्राम हींग अच्छी तरह मिलाकर फिर 1 दिन के लिए धूप में रखें व समय–समय पर हिलाते रहें। अब प्रति किलो आचार हेतु 250 ग्राम तेल को 1 ग्राम रतनजोत के साथ उबाल देकर ठन्डा होने पर आचार में मिलाकर प्रयोग हेतु आचार को कांच की बरनी मे भरकर रखलें।

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक निदेशक कृषि, कृषि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक	– श्री भवानी सिंह देथा
सम्पादक	– श्री हीरेन्द्र शर्मा
सह सम्पादक	– कु. पूनम चौधरी
परामर्श	– श्री के. आर. यादव
डिजाइन	– श्री आर. मैसी